प्रभात

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

www.subhartimedia.com | लखनऊ, सोमवार, 07 अक्टूबर 2019, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 12 | उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड से प्रकाशित

सुभारती मीडिया परिवार की ओर से राम नवमी की हार्दिक शुभकामनाएं

भारत में चक्रवाती बारिश और बाढ़ का प्रकोप : हर वर्ष बढ़ती घटनाएं

लखनऊ-प्रभात

भारत तीन तरफसे तटीय और चौथी तरफ हिमालय की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। 128 बिलियन की कुल आबादी के मुकाबले लगभग 560 मिलियन भारतीय आबादी 43.7 फीसदी तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में रहती है और 171 मिलियन (14.2 फीसदी) आबादी भारत के तटीय क्षेत्र और तटीय जिलों में रहती है। जो सामान्यतः निचली सतह और घनी आबादी वाले क्षेत्र होते हैए जिनपर बाढ़ का विनाशकारी प्रभाव पड सकता हैं। इस वर्ष भारतवर्ष के तटीय क्षेत्र में बाढ़ और हिमालय क्षेत्रों में भूस्खलन के कई गुना प्रभाव से सामना कर रहे हैं। आज भारतवर्ष में बड़े चक्रवाती तूफानों और तेज हवाओ से उसके तटीय क्षेत्रो में भारी बारिश हो रही है तथा उसका दबाव पठारी क्षेत्रो में होने से मध्य प्रदेश उत्तर.प्रदेश व विहार आदि तक जल प्रलय के रूप मे बदल गया है। प्रत्येक साल इसकी आवृत्ति व विनाशकारी प्रभाव बढ़ रहा है कुछ घटनाओ का उल्लेख निम्नवत है।

उत्तराखंड राज्य मे केदारनाथ घाटी व उसके अन्य हिस्सो मे 16.17 जून 2013 को अभूतपूर्व भूस्खलन व विनाशकारी बाढ़ आई थी। केदारनाथ मंदिर के पास 16 जून को लगभग 7:30 बजे भूस्खलन और तेज बारिश की तवाही का सामना करना पडा। प्रोण् भरत राज सिंह एकमात्र ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने घोषणा की थी कि उक्त घटना किसी बादल फटने की नहीं है बल्कि हिमालय की ऊँचाई पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण घने ग्लेशियर की चादरों में दरार आने के कारण ऐसा हुआ था जिससे भारी ग्लेशियर की चादरें पहली बारिश के दौरान अलग होकर नीचे चली गईं और विनाशकारी भूस्खलन व बाढ का कहर बन गईं। 12 अक्टूबर 2013 को ओडिशा के तट पर आए भयंकर चक्रवाती तूफान फीलिन ने अपने साथ बहुत तेज़ गति की हवाएँ और भारी वर्षा ला दी जिससे राज्य के तटीय जिलों में विशेष रूप से घरोंए खड़ी फसलों, बिजली और संचार व्यवस्था को व्यापक क्षति हुई।। चक्रवात फीलिन के घटना के बादए राज्य सरकार को विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक से सहयोग लेकर विशेषरूप से प्रभावित जिलों को छति से उबरने के लिए पुनर्स्थापित और पुनर्निर्माण कार्यों को तीव्रता प्रारम्भ करने की आवश्यकता पडी। 11 अक्टूबर को हुदहुद ने तीव्र गति से आगे बढा और अपने केंद्र विंदु पर आंख गडाया। इसके बाद के सम्यांतर मेंए तूफान न्यूनतम तीव्रता के साथ 950 उड़ंत ;भ्ह में 28ण्05द्ध और 185 किमी ध् घंटा ;115 मील प्रति घंटेद्ध की औसत हवा की गति की तीव्रता को बनाए रखते हुएए तीन मिनट मे इसने 12 अक्टूबर को दोपहर के समय विशाखापत्तनम आंध्र प्रदेश में लैंडफॉल बनाया। विशाखापत्तनम में साइक्लोन वार्निंग सेंटर के हाई विंड स्पीड रिकॉर्डर अधिकतम हवा का झोंका 260 किमी घंटा ;160 मील प्रति घंटेद्ध का रिकॉर्ड किया गया था।

अरब सागर में तीसरा सबसे शक्तिशाली चक्रवात अक्टूबर 2014 के अंत में 205 किमी घंटा (125 मील प्रति

प्रो.भरत राज सिंह
महानिदेशक
(तकनीकी)
एमएसएम, लखनऊ

घंटेद्ध से 215 किमी घंटा ;130 मील प्रति घंटे) के बीच अनुमानित अधिकतम हवाओं तक पहुंच गया। उत्तर हिंद महासागर का चक्रवाती मौसम का तीसरा नामित तूफान 28 अक्टूबर 2015 को पश्चिमी भारत के दूर.दराज से विकसित हुआ। पानी के तापमान में रिकॉर्ड गर्मी से चक्रवाती प्रणाली से उत्पन्न होने के कारण इसे भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ;ने चपला नाम दिया। 30 अक्टूबर 2015 तक तूफान ने संवहन के प्रक्रिया के माध्यम से एक अच्छी तरह से अपना क्षेत्र और केंद्र विंदु विकसित कर लिया ।

चक्रवात टिटली ने आंध्र प्रदेश में कम से कम आठ लोगों को मार डाला और 11 अक्टूबर 2018 की सुबह भूस्खलन होने के बाद ओडिशा में तबाही का निशान छोड़ दिया। टिटली ने 130.140 किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाली हवा के साथ एक बहुत ही भयंकर चक्रवाती तूफान के रूप में लैंडफॉल बनाया। दक्षिणी ओडिशा और उत्तरी आंध्र प्रदेश के तट को पार करने के तुरंत बादए टिटली 90.100 किमी प्रति घंटे की हवा की गति के साथ यह भयंकर चक्रवाती तूफान कमजोर पड गया।

चक्रवात फेथाई ने आंध्र प्रदेश में हजारों लोगों को धूल व भूस्खलन से विस्थापित करने के लिए बाध्य किया। यह तूफानए बिनासकारी गाजा चक्रवात जो पड़ोसी तमिलनाडुए केरल और पांडूचेरी में तबाही मचाने के ठीक एक महीने बाद आया था। उस चक्रवात की वजह से हवा की गति 120 किमी प्रति घंटा हो गईए जिसने कम से कम 45 लोगों के जीवन का समाप्त किया और घरोंए फसलों और बुनियादी ढांचे को भी व्यापक नुकसान पहुंचाया। पूर्वी भारत के तटीय शहर पुरी के पास एक विशाल उष्णकटिबंधीय चक्रवात ने 03 मई 2019ए शुक्रवार को भीषण तवाही कर गयाए जिससे लाखों लोगों का घर प्रभावित हुआ। यह माना जाता है कि तूफानए जिसे साइक्लोन जिसे श्एम्फेनीश् कहा गयाए ने 115 मील प्रति घंटे ;एक.श्रेणी के 3 तूफान के बराबरद्ध से अधिक हवाओं के साथ तट पर स्ट्राइक किया। यह 20 वर्षों में भारत को तवाही पहुचाने वाला सबसे तगडा तूफान था। उष्णकटिबंधीय चक्रवात वायु से छह मिलियन लोग प्रभावित होने की सम्भावना थी जो उत्तर.पश्चिम भारत की ओर 12 जून 2019ए को बढ़ रहा था और गुरुवार सुबह से गुजरात के समुद्र तट पर टकराने की सम्भावना थी। 12 जून, 2019 बुधवार को भारत के गृह मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि लगभग 300,000 लोगों को 700 आश्रय

उपरोक्त अध्ययन से हमने पाया कि पहाड़ी क्षेत्र में अत्यधिक तबाहीए धूल भरी आंधीए चक्रवाती तूफान और भूस्खलन वर्ष 2014 के बाद से सन्युक्त राज्य अमेरिका से शुरू हुआ और अब दुनिया भर में इसकी आवृत्ति (फिक्वेंसी)कई गुना बढ़ गई है। सबसे बुरी तरह प्रभावित क्षेत्र अमरीकाए कनाडाए ब्रिटेनए भारतए चीनए जापानए थाईलैंडए ऑस्ट्रेलिया और न्युजीलैंड आदि हैंए जहाँ पर लोगों के हताहत होने का खतराए बुनियादी ढांचे को नुकसानरू घरोंए पुलों व पावर स्टेशन को बहा ले जाने की स्थिति हर साल अधिक हो रही हैं। यह केवल मानव निर्मित ग्लोबल.वार्मिंग की समस्या के कारण हैए जिसने पारिस्थितिक प्रणाली को पूरी तरह से अप्रभावी बना दिया है। विकसित और विकासशील देशों की जीडीपी आपदा प्रबंधन नियंत्रण के भारी खर्च के कारण कम हो रही है। हमें पर्यावरणीय क्षति को नियंत्रित करने के लिए अधिकाधिक पेड़ लगाकर हरियाली के क्षेत्रफल को 60 फीसदी लाना होगा, जिससे प्रकृति में हुये विघटन को वापस लाया जा सके। हमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जल.संचयन हेतु जलाशयों को पुनर्स्थापित कर धरती को रिचार्ज करना होगा और अक्षय ऊर्जा को भी यथासंभव अधिकाधिक उपयोग करना होगा।